पत्र लेखन - अनौपचारिक पत्र

यात्रा का वर्णन करते हुए पिताजी को पत्र लिखिए।

छात्रावास,

एस.बी.स्कूल,

मेरठ।

दिनांक: ....

आदरणीय पिता जी,

चरण स्पर्श!

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। आशा है आप भी सकुशल होंगे। हम आज प्रात: ही दिल्ली शहर की यात्रा करके लौटे हैं। उस यात्रा का रोमांच अब तक मेरे मन में बसा हुआ है। दिल्ली शहर की शोभा देखकर मन प्रसन्न हो गया। ये यूहीं भारत का दिल नहीं कहलाती हैं। इस शहर की ऊँची इमारतें, चौड़ी सड़कें देखकर मन मुग्ध हो गया। हमने यहाँ के सभी स्थल, जैसे- कुतुब मीनार, लाल किला, जामा मस्जिद, इंडिया गेट, राष्ट्रपति भवन, राजघाट और कमल मंदिर देखा और उनकी तस्वीरें भी खींची। हमें, हमारी अध्यापिका ने बताया कि यह सात बार उजड़ी और बसाई गई है। भारत के अधिकतर सम्राटों का यह निवास-स्थान रह चूकी है। मैंने और मेरे साथियों ने कनाट प्लेस से कुछ खरीदारी भी की है। हमारी अध्यापिका ने हमें मेट्रो में भी यात्रा करवाई। इसमें यात्रा करने का अपना ही मज़ा था। कभी यह विशाल खंभों पर बने पुलों के ऊपर से गुजरती तो कभी भूमिगत स्थानों से गुजरती थी। मैंने स्नेहा, माँ और आपके लिए उपहार खरीदे हैं। ये उपहार मैं घर आते समय लाऊँगा। माँ को प्रणाम एव बहन को प्यार कहिएगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,

दिनेश

छोटे भाई की कुशलता जानने हेतु पत्र लिखिए।

एफ. ओ. 16 एच,

दिलशाद कलोनी,

दिल्ली-110095

दिनांक: ....

प्रिय भाई अशोक,

आशीर्वाद!

बहुत दिनों से तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया है। अत: तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। आशा है तुम वहाँ सकुशल होगें। घर में भी सब कुशलपूर्वक हैं। माता-पिताजी तुम्हारी पढ़ाई एवं स्वास्थ्य के लिये काफी चिन्तित हैं। मालविका की परीक्षा अभी समाप्त हुई है। वह तुम्हें बहुत याद करती है। मैंने तैराकी सीखने के लिए दाखिला ले लिया है। पिताजी और माताजी का स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है।

अपने विषय में बताओ तुम कैसे हो? तुम्हारे विद्यालय में सब कैसा चल रहा है? छात्रावास में तुम्हारे मित्र बने हैं या नहीं? परीक्षा के लिए अभी कुछ समय शेष रह गया होगा। आशा करता हूँ कि तुम अपनी परीक्षा की तैयारियों में जुटे होगें।

तुम अपना ध्यान रखना और मन लगाकर पढ़ना। समय-समय पर पत्र अवश्य लिखा करो। इससे तुम्हारे विषय में जानकारी मिलती रहती है। तुम घर कब आओगे? तुमसे मिलने की बहुत इच्छा हो रही है। परीक्षा समाप्त होते ही अपने आने का दिन अवश्य बताना।

हम सब तुम्हारे उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं। परीक्षा के लिए ढेरों शुभकामनाएँ। पत्र का उत्तर शीघ्र देना। तुम्हारे पत्र का इंतजार रहेगा।

तुम्हारा शुभचिन्तक भाई,

रजनीश

जन्मदिन पर उपहार के लिए अपने मामाजी को धन्यवाद पत्र लिखिए।

96/7, गीता कालोनी,

नई दिल्ली-110031

दिनांक: ....

आदरणीय मामाजी,

चरण स्पर्श!

कल मुझे आपके द्वारा भेजा उपहार मिला। उपहार देखकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। मैं जानती थी कि आपको मेरा जन्मदिन याद होगा। परन्तु उस दिन आप मेरे लिए उपहार भेजेंगे, यह मैंने सोचा भी नहीं था। मैं बहुत ही प्रसन्न हुई कि आपने मेरा जन्मदिन याद रखा जबकि आप काफी व्यस्त रहते हैं।

आपने जो उपहार भेजा है, वह मेरे लिए अनमोल है। इस टिकट अलबम की मुझे बहुत आवश्यकता थी। मेरी कक्षा में मेरी सारी सहेलियों के पास अपना-अपना टिकट अलबम है। आज से मेरे पास भी मेरा टिकट-अलबम होगा। मेरा टिकट अलबम सबसे अलग और सुंदर है। इंग्लैड से भेजे गए इस टिकट-अलबम में हर देश की टिकट लगी हुई है। ये टिकटें बड़े सुंदर तरीके से लगाई गई हैं, जो इसे सबसे विशिष्ट बनाती है। माँ-पिताजी ने भी मुझे अच्छा उपहार दिया है। आप मेरी तरफ़ से निश्चिंत रहिएगा। मैं अपनी पढ़ाई बड़े मन से कर रही हूँ।

आपके उपहार के लिए एक बार फिर धन्यवाद करती हूँ। मामी को प्रणाम एवं गोलू को प्यार।

आपकी प्यारी भांजी,

कुसुम

विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए रुपए मँगवाने हेतु पिताजी को पत्र लिखिए।

केन्द्रीय विद्यालय (छात्रावास),

शिवाजी पार्क

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

आदरणीय पिताजी,

सादर प्रणाम!

आपका पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि घर में सभी सदस्य स्वस्थ हैं। मैं यहाँ आप सबके आशीर्वाद से कुशलतापूर्वक हूँ। बहुत दिनों से घर आने की सोच रहा था। परन्तु छ: माही परीक्षा के कारण रुकना पड़ा। पिताजी हमारी परीक्षा के बाद विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

इस आयोजन के उपलक्ष्य में अध्यापिका ने प्रति छात्र पाँच सौ रुपये जमा करवाने के लिए कहा है। पंजाब के लोकगीत पर नृत्य करने के लिए मेरी कक्षा में से कुछ बच्चों को चुना गया है। इनमें से एक मैं भी हूँ। अध्यापिका ने इसी नृत्य की वेशभूषा के लिए हमसे पाँच सौ रुपये माँगे हैं। इस आयोजन में बच्चों द्वारा अन्य लोकगीतों में भी नृत्य प्रस्तुत किया जाएगा।

इस आयोजन में विद्यालय में एक बड़ा मेला भी लगाया जाएगा। जिसमें खाने-पीने के विभिन्न स्टाल और झूले भी लगाए जाएगें। छात्रों द्वारा बनाई गई सजावटी वस्तुओं के भी स्टाल लगाए जाएँगे, जिसे अन्य बच्चे खरीद सकते हैं।

अत: आपसे निवेदन है कि कृपा करके मुझे एक हज़ार रुपए का इंतज़ाम करके डाक द्वारा शीघ्र भिजवा दें। अब पत्र समाप्त करता हूँ। माताजी को प्रणाम कहिएगा एवं कमला को प्यार। पत्र अवश्य लिखते रहिएगा। आपके पत्र का इंतज़ार रहेगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,

कुनाल

फ़िज़ूलखर्च करने वाली बहन को समझाते हेतु पत्र लिखिए।

चांदनी चौक,

नई दिल्ली-110006

दिनांक: ....

प्रिय कोमल,

बहुत प्यार!

मैं तुम्हें बहुत समय से पत्र लिखना चाह रहा था। परन्तु व्यस्त होने के कारण नहीं लिख पा रहा था। तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। पत्र में तुमने पिताजी से तीन हज़ार रुपए भिजवाने का आग्रह किया है। पिछले सप्ताह ही तो तुम्हें पिताजी ने तीन हज़ार रुपए भिजवाए थे। इतनी जल्दी तुम्हारे पैसे कैसे समाप्त हो गए। तुम्हें अपनी इस तरह की फिजूलखर्ची पर नियंत्रण करना चाहिए।

इस तरह पैसे की बर्बादी अच्छी नहीं होती है। पिताजी को तुम्हें पैसे भेजने में किसी तरह की कठिनाई नहीं है। परन्तु मनुष्य को चाहिए कि पैसों का सम्मान करें। विद्यार्थी का उद्देश्य होता है, ज्ञान प्राप्त करना। व्यर्थ के बनाव-श्रृंगार में तुम्हें नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि इसी बनाव-श्रृंगार के कारण तुम पैसों को उड़ा रही हो। तुम्हें पिताजी यह पैसे अपनी पढ़ाई को सुचारू रुप से चलाने के लिए देते हैं। इसलिए तुम्हें चाहिए कि ज़रुरत के हिसाब से पैसों को खर्च करो। अधिक धन खर्च करने से तुम्हारी आदतें भी खराब हो सकती हैं। तुम्हारी पढ़ाई में भी विघ्न पड़ेगा।

अत: मेरा यह परामर्श है कि इधर-उधर की बातों से अपना ध्यान हटाकर अपना मन पढ़ाई में लगाओ ताकि माता-पिता का नाम रौशन हो। अभी तो तुम्हारी आवश्यकता के लिए पिताजी तीन हज़ार रुपए भिजवा रहे हैं। परंतु आगे से ध्यान रखना। पत्र समाप्त करता हूँ।

तुम्हारा शुभचिंतक भाई,

विशाल

छोटे भाई को परीक्षा की तैयारी हेतु सुझाव देते हुए पत्र लिखिए।

215, सी-ब्लॉक,

हौज खास,

नई दिल्ली-110016

दिनांक: ....

प्यारे अरीजीत,

बहुत स्नेह!

कल तुम्हारा पत्र मिला, यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि तुम परीक्षा की तैयारियों में व्यस्त हो। तुम अपनी पढ़ाई को लेकर इतने चिंतित हो यह बात एक अच्छे विद्यार्थी की पहचान होती है।

परीक्षा की तैयारी करते हुए, मैं तुम्हें कुछ सुझाव देना चाहता हूँ। यदि तुम इन सुझावों पर अमल करोगे तो तुम्हारी कुछ सहायता हो जाएगी। तुम्हें प्रात:काल उठकर पढ़ाई करनी चाहिए क्योंकि प्रात:काल का समय पढ़ाई के लिए अच्छा समय माना जाता है। पढ़ाई करते समय एक साथ सभी पाठों को पढ़ने और समझने का प्रयास मत करना।

इसका दुष्परिणाम यह होगा कि दिमाग में खिचड़ी-सी बन जाएगी, जिससे कुछ समझ नहीं आएगा। अपनी पढ़ाई करने की समय-सारिणी बनाकर रखो।

उसके अनुसार पढ़ाई करो। हर अध्याय को ध्यान से पढ़ो। यदि अध्यायों का सही से अध्ययन किया जाए तो हमारी आधी कठिनाई तो ऐसे ही समाप्त हो जाएगी।

आशा करता हूँ कि तुम इन सुझावों पर अमल करोगे और परीक्षा में अच्छे परिणाम लाओगे। तुम्हारे परिश्रम पर हम सबको पूरा विश्वास है। परीक्षा समाप्त होते ही छुट्टियों पर घर आना।

हम सब तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे। परीक्षा के लिए तुम्हें ढेरों शुभकामनाएँ।

तुम्हारा भाई,

ललित

बीमार माताजी के बारे में जानने के लिए पिताजी को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन

दिनांक: ....

आदरणीय पिताजी,

सादर प्रणाम!

कल आपका पत्र मिला। यह जानकर अच्छा लगा कि नेहा और अमित परीक्षा में प्रथम श्रेणी से पास हुए हैं। परन्तु माताजी के स्वास्थ्य के विषय में जानकर बहुत दुख हुआ। आपने उन्हें चिकित्सक को तो दिखाया होगा, उसका क्या कहना था? यदि उसकी दवाइयों से स्वास्थ्य लाभ नहीं हो रहा है, तो आपको शहर के बड़े अस्पताल लेकर जाना चाहिए। इस तरह से लापरवाही करना अच्छी बात नहीं है। आप तो जानते ही हैं, माताजी हमेशा अपने सिवा सभी की चिंता करती रहती हैं। उन्हें यदि कोई परेशानी होगी तो वह उसे टालती रहती हैं।

आपको चाहिए कि मौसी को जल्दी से घर बुलवा लीजिए, जिससे वह माताजी की देखभाल करे सकें।

चिकित्सक की दी हुई दवाइयाँ उन्हें समय पर खिलाते रहिएगा। उनके भोजन का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। उन्हें फलाहार कराते रहिएगा और मौसमी का जूस अवश्य दीजिएगा।

मैं कोशिश करता हूँ कि विद्यालय से अवकाश लेकर शीघ्रता से घर आ सकूं। तब तक आप मुझे पत्र द्वारा माताजी की तबीयत के बारे में बताते रहिएगा। मेरी चिंता मत कीजिएगा। मैं यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ।

आपका पुत्र,

महेश

दशहरे-अवकाश के बारे में जानकारी देते हुए पिताजी को पत्र लिखिए।

दून विद्यालय (छात्रावास),

देहरादून।

दिनांक: ....

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम!

आज ही आपका पत्र मिला। हालचाल मालूम हुआ। मैं यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ। यह जानकर अच्छा लगा कि घर में सभी राजी-खुशी हैं। विद्यालय में पिछले सप्ताह सांस्कृतिक कार्यक्रम था। इसमें मैंने भाग लिया था। हमारे नृत्य को सबने सराहा था। हमें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

कुछ दिन पश्चात विद्यालय में दशहरे की छुट्टियाँ पड़ने वाली है। ये छुट्टियाँ 6 अक्टूबर से आरंभ होने वाली हैं। ये छुट्टियाँ दस दिन की होगीं। अत: मैं इस बार छुट्टियों में घर अवश्य आऊँगा। भईया भी मेरे साथ घर आएँगे। आपको इस विषय में सूचित करना ठीक समझा।

इस बार घर में हम सब साथ-साथ होगें। हमारा सारा परिवार नवरात्रें और दशहरे को साथ मिलकर मनाएगा। पिताजी हम सब साथ मिलकर दशहरा देखने जाएँगे।

पत्र समाप्त करता हूँ। अब आपसे घर में मुलाकात होगी। आने की सूचना आपको शीघ्र ही भेज दूँगा। माताजी को मेरा प्रणाम कहिएगा और टिमटिम को मेरा प्यार।

आपका पुत्र,

दीपक

बड़े भाई से घड़ी मँगवाने हेतु पत्र लिखिए।

बहादुरगढ़,

दिनांक: ....

आदरणीय भाई साहब,

सादर प्रणाम!

बहुत दिनों से आपको पत्र लिखना चाह रहा था, परन्तु व्यस्तता के कारण नहीं लिख पाया। अगले महीने से परीक्षा आरंभ होने वाली है। अत: परीक्षा की तैयारियों में जुटा हुआ हूँ।

भईया मेरे पास घड़ी का अभाव है। घड़ी नहीं होने के कारण मुझे समय का पता नहीं चल पाता है। इस कारण में अपनी पढ़ाई समय पर नहीं कर पाता हूँ। पढ़ते-पढ़ते समय का ज्ञान नहीं होता है, समय पर सो भी नहीं पाता हूँ और न ही विद्यालय समय पर पहुँच पाता हूँ। मेरे कमरे में एक घड़ी थी, वह भी टूट गई है। मेरे मित्र के पास उसकी घड़ी थी परन्तु वह अपनी बीमारी के कारण अपने माता-पिता के पास दिल्ली चला गया है। इस समय मेरे पास घड़ी नहीं है। रात में यदि मुझे समय देखना होता है, तो मैं स्वयं को लाचार पाता हूँ। रात के समय अपने दूसरे मित्रों के पास जाकर उनसे समय पूछना अच्छा नहीं लगता है।

अत: आपसे निवेदन है कि जितनी शीघ्र हो सके मुझे एक घड़ी भिजवा दें। घड़ी होने से मैं समय पर अपने हर काम कर पाऊंगा। पढ़ाई और अन्य कामों को भी समय-सारणी के अनुसार पूरा कर पाऊंगा।

परीक्षा के समय में यह मेरी बहुत सहायता करेगी। आप मेरी तरफ़ से निश्चिंत रहिएगा। मैं अपनी पढ़ाई बड़े मन से कर रहा हूँ। भाभी को प्रणाम एवं बच्चों को प्यार। पत्र लिखते रहिएगा। आपके पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका प्यारा भाई,

रमेश

चिन्तित माँ को छात्रावास से अपनी कुशलक्षेम बताने हेतु पत्र लिखिए।

छात्रावास,

देहरादून।

दिनांक: ....

पूज्य माताजी,

सादर प्रणाम!

कल आपका पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि घर में सब कुशलमंगल है। मैं भी आप सबके आशीर्वाद से कुशलमंगल हूँ। आपके पत्र से मुझे ज्ञात हुआ कि आप मेरे लिए बहुत चिन्तित रहती हैं। माँ आपके स्वास्थ्य के लिए यह ठीक नहीं है।

मेरा छात्रावास बहुत अच्छा है। यहाँ पर बहुत बड़ा भोजनालय है। जहाँ पर तीनों समय हमारे लिए भोजन पकाया जाता है। सुबह नाश्ते में हमें पोहा, दूध, एक अंडा परोसा जाता है, दोपहर में दाल-चावल और रायता परोसा जाता है और रात के समय भोजन में दाल, चावल, रोटी, सलाद व एक सब्जी परोसी जाती है। हमारे वोर्डन बहुत ही अच्छे व्यक्ति हैं। वह हमारे साथ हमेशा प्यार से रहते हैं।

छात्रावास में दो अन्य मित्रों के साथ रहता हूँ। हमारा कमरा बहुत ही साफ़-सुथरा व हवादार है। बिजली चौबीसों घंटे रहती है। छात्रावास के नज़दीक ही चिकित्सालय की सुविधा है। स्कूल में भी सभी तरह की सुविधाएँ उपलब्ध है। वहाँ सभी अध्यापक और अध्यापिकाएँ बहुत अच्छे हैं। मित्रों के साथ दिन कैसे निकल जाता है पता ही नहीं चलता।

अत: आपसे अनुरोध है कि मेरी चिन्ता करना छोड़कर स्वयं का ध्यान रखिए। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ यदि कोई भी परेशानी होगी तो मैं आपको अवश्य बताऊँगा। पत्र समाप्त करता हूँ। घर में पिताजी व दादाजी को चरण-स्पर्श कहिएगा और नेहा को प्यार।

आपका पुत्र,

गर्मियों की छुट्टियों (दार्जिलिंग) में हुए अनुभव को बताने हेतु मित्र को पत्र लिखिए।

3, इंदिरा पार्क,

नई दिल्ली-110045

दिनांक: ....

प्रिय मित्र,

बहुत प्यार!

बहुत समय से तुमने कोई पत्र नहीं लिखा है। तुमने मेरे पत्र का जवाब भी नहीं दिया है। आशा करता हूँ कि तुम वहाँ कुशलपूर्वक होगें। मित्र मैं पिछले दिनों छुट्टियों में परिवार के साथ दार्जिलिंग गया हुआ था।

पूरा दार्जिलिंग सैलानियों से भरा पड़ा था। इस समय वहाँ बहुत ही चहल-पहल थी। भारत के हर हिस्से से लोग वहाँ घुमने आए हुए थे।

गर्मियों में दार्जिलिंग जाने का अपना ही आनंद है। हिमालय के पास स्थित होने के कारण यहाँ वातावरण बहुत ही ठंडा रहता है। इसके सौन्दर्य की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। हरे-भरे पहाड़, चाय के बागान, ऊँचे-ऊँचे चीड़ के वृक्ष मन को मोह लेते हैं।

हमने यहाँ रेल से यात्रा करने का मन बनाया था। यहाँ की प्रसिद्ध रेल 'टोय ट्रेन' से हमने दार्जिलिंग की सुंदरता को नज़दीक से देखा और उसका आनंद लिया। 'टाइगर हिल' में हमने कई सैलानियों को चढ़ाई करते हुए देखा। यह कचंनजंघा के नाम से भी जानी जाती है। यहाँ पर प्राचीन बनी इमारतें आज भी देखने को मिल जाती है। चाय के बागानों में हमें घूमने का मौका मिला। हमने यहाँ के बाज़ारों से चाय व सजावटी सामान भी खरीदा। यहाँ पर रहते हुए कब दो सप्ताह गुज़र गए पता ही नहीं चला।

काश! तुम भी हमारे साथ गए होते तो बात ही कुछ ओर थी। वहाँ से मैं तुम्हारे लिए भी उपहार लाया हूँ। पत्र समाप्त करता हूँ। घर में सभी बड़ों को मेरा नमस्कार कहना और छोटों को प्यार।

तुम्हारा मित्र,

राघव

दीदी के जन्मदिन के अवसर पर मित्र को निमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।

265, पॉकेट-2,

सेक्टर-16, द्वारिका,

नई दिल्ली-110075

दिनांक: ....

प्रिय सखी सोहना,

बहुत प्यार!

कल तुम्हारा पत्र मिला। पत्र में यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि इस बार तुम अपनी कक्षा में प्रथम आई हो। मैं तुम्हें पत्र एक विशेष कारण से लिख रही हूँ। पिताजी ने इस बार श्वेता दीदी का जन्मदिन बहुत धूमधाम से मनाने का निश्चय किया है। इस अवसर पर हमारे घर पर एक समारोह का आयोजन किया गया है। मैं तुम्हें इसमें भाग लेने के लिए सप्रेम आंमत्रित करती हूँ। समारोह का कार्यक्रम इस प्रकार है-

रात सात बजे ....बच्चों का नृत्य और खेल कार्यक्रम

रात नौ बजे ....केक काटने की रस्म

रात्रि दस बजे ....सहभोज प्रारंभ

आशा करती हूँ कि तुम इस अवसर पर सपरिवार ज़रूर आओगी। मुझे तुम्हारा इंतजार रहेगा। घर में बड़ों को प्रणाम कहना एवं छोटों को प्यार।

तुम्हारी सखी,

कन्या

गर्मियों की छुट्टियों के निमंत्रण को अस्वीकृत करते हुए क्षमा माँगने हेतु मित्र को पत्र लिखिए।

4567, गली नं-6,

मुल्तानी डांटा,

नई दिल्ली-110055

दिनांक: ....

प्रिय मित्र,

मधुर स्नेह!

कल ही तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा निमंत्रण पाकर मन प्रसन्न हो गया था। तुम्हारे इस निमंत्रण के लिए मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ। मैं भी तुमसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। मेरी भी यही इच्छा थी कि इस बार की छुट्टियाँ तुम्हारे साथ बिताऊँ। परन्तु यह संभव नहीं हो पाएगा।

कल रात माताजी के साथ छोटी-सी दुर्घटना घट गई है, जिसके कारण उनके पैर की हड्डी टूट गई है। उनके पैर में पलस्तर चढ़ाया गया है। चिकित्सक ने उन्हें पूरे दो महीने आराम करने की सलाह दी है। स्वयं

के काम करने के लिए उन्हें अन्य की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। घर में सबसे बड़े होने के नाते मेरा कर्तव्य है कि मैं माताजी की सेवा करूँ। हमारा मिलना और घूमना तो अगले वर्ष भी हो सकता है।

उम्मीद करता हूँ कि तुम मेरी परेशानी को समझोगे और मुझसे नाराज़ नहीं होगे। अपनी छुट्टियाँ बड़े मज़े से बिताना। अपनी छुट्टियों में तुमने क्या-क्या किया और कहाँ-कहाँ घुमा, वे सब मुझे पत्र लिखकर अवश्य बताना। पत्र समाप्त करता हूँ। घर में सभी बड़ों को मेरा प्रणाम कहना और छोटों को प्यार। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारा मित्र,

संग्राम

अपने मित्र को कुमित्रों से सावधान करते हुए पत्र लिखिए।

3/25, शक्तिनगर,

नई दिल्ली-110007

दिनांकः ....

प्रिय मित्र,

बहुत प्यार!

तुम्हारी माताजी से बात हुई, उनसे पता चला कि तुम इस बार परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए हो। यह सुनकर विश्वास नहीं हुआ। तुम्हारी मेधावी छात्रों में गिनती की जाती है। तुम्हारी माताजी ने बताया कि तुम आजकल सारा-सारा दिन व्यर्थ के लड़कों के साथ घूमने में नष्ट करते हो। इसके लिए तुम्हें विद्यालय की तरफ़ से भी चेतावनी दी जा चुकी है। उनके साथ सारा समय नष्ट करने के कारण ही तुम परीक्षा में भी अनुत्तीर्ण हुए हो।

तुम्हारे ये कुमित्र तुम्हें कहीं का नहीं छोड़ेंगे। बुरी संगति मनुष्य को ले डुबती है। विद्वानों ने सही कहा है, 'अच्छी संगति मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण होती है।' एक अच्छा मित्र अपने मित्र का मार्गदर्शन करता है। तुम्हारे कदमों को बुरी राह में जाने से रोकता है। इसलिए हमें चाहिए कि अच्छे व सच्चे लोगों से मित्रता करें।

तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हें पढ़ने के लिए देहरादून के सबसे अच्छे विद्यालय में भेजा है ताकि तुम्हारा भविष्य संवर सके। परन्तु तुम्हारे इस व्यवहार से वे बहुत चिन्तित हैं। मुझे आशा है कि तुम कुसंगति से अपना मन हटाकर पढ़ाई में ध्यान लगाओ।

तुम्हारा शुभचिंतक,

हर्ष

दुर्घटनाग्रस्त मित्र के हाल-समाचार जानने के लिए पत्र लिखिए।

354, चिराग दिल्ली,

नई दिल्ली-110017

दिनांक: ....

प्रिय मित्र कुमार,

बहुत स्नेह!

परोसों समाचार पत्र से तुम्हारी बस-दुर्घटना का समाचार पढ़ा, जिसे सुनकर मन विचलित हो गया। तुम्हारी फोटो देखकर तो मैं घबरा ही गया था। उससे पता चला कि तुम दिल्ली से शिमला जाने वाली बस से यात्रा कर रहे थे। अत्यधिक वर्षा के कारण चट्टान खिसकने से उसका एक हिस्सा टूट कर सड़क पर अचानक गिर पड़ा था। जो तुम्हारी बस से टकरा गया।

ईश्वर की कृपा से सब यात्री बच गए। पढ़ा था कि कुछ को गंभीर चोटें आई हैं। परन्तु ठीक समय पर उपचार सुविधा मिलने के कारण स्थिति को गंभीर होने से बचाया जा सका है। मुझे विश्वास है कि तुम जल्दी से ठीक हो जाओगे। परन्तु अब तुम्हें पूर्णरूप से विश्राम करना आवश्यक है। धैर्य से काम लेना व ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखना। यह कष्टपूर्ण समय भी जल्दी निकल जाएगा। तुम्हें पढ़ाई की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। मैंने विद्यालय में प्रधानाचार्य को इस विषय में सूचित कर दिया है। मैं तुम्हारे लिए सभी विषयों पर नोटस् बना रहा हूँ।

परीक्षा की तैयारी हेतु ये तुम्हारे काम आएँगे। मैं तुमसे शीघ्र ही मिलने आऊँगा। मैं तुम्हारी किसी प्रकार की सहायता करूँ सकूँ तो अवश्य कहना।

तुम्हारा मित्र,

वीरेन्द्र

अधिक पुस्तक पढ़ने वाले मित्र को खेलों के महत्व के बारे में बताते हुए पत्र लिखिए।

1010, सेक्टर-1,

आर.के.पुरम,

नई दिल्ली-110001

दिनांक: ....

प्रिय सखी मंजू,

बहुत प्यार!

बहुत समय हो गया है तुमसे मिले हुए। कुछ समय पूर्व हमारी अन्य सखी मालविका से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ था। उससे पता चला कि तुम अपना सारा समय पुस्तकें पढ़ने में व्यतीत करती हो। खेलों में भाग लेना और व्यायाम करना तुमने छोड़ दिया है। अब तुम संध्या के समय भी खेलने नहीं आती हो। पुस्तकें पढ़ना अच्छी बात है। ये हमारे ज्ञान को बढ़ाती हैं और मनुष्य की सच्ची मित्र भी कहलाती हैं। परन्तु स्वास्थ्य मनुष्य के लिए अति आवश्यक है। हमने यदि अपने स्वास्थ्य की अनदेखी की तो जल्द ही बीमार पड़ सकते हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए तुम्हें शारीरिक तौर पर स्वास्थ्य होना आवश्यक है। इसके लिए तुम्हें खेलों के लिए भी समय निकालना ज़रूरी है। व्यायाम करना भी अच्छा होता है। यह समय का अपव्यय नहीं है बल्कि स्वयं को स्वास्थ्य रखने के आवश्यक उपाय हैं।

मुझे विश्वास है कि तुम मेरी सलाह पर गौर करोगी एवं खेलों में हिस्सा लेना आरंभ करोगी।

तुम्हारी सखी,

मधु

अपने मित्र को विद्यालय की विशेषताएँ बताते हुए पत्र लिखिए।

बिशप कॉटन स्कूल,

शिमला।

दिनांक: ....

प्रिय मित्र समीर,

मधुर स्नेह!

कल तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। पिछले पत्र में तुमने मेरे विद्यालय के बारे में पूछा था। तुम्हारे प्रश्न का उत्तर में अपने इस पत्र में दे रहा हूँ। मेरा स्कूल 'बिशप कॉटन स्कूल' के नाम से जाना जाता है। यह शिमला के बेहतरीन स्कूलों में से एक है। इस स्कूल में लोकप्रिय लेखक 'रस्किन बॉन्ड' ने चौथी कक्षा तक पढ़ाई की थी। मेरा स्कूल एशिया के सबसे पुराने बोर्डिंग स्कूलों में से एक है। इसको स्थापित हुए 152 साल हो गए हैं।

हमारा विद्यालय अपने उच्च शैक्षिक स्तर और अनुशासन के लिए प्रसिद्ध है। यह शिमला की सुंदर वादियों में स्थित है। यह ऐसा पहला स्कूल है, जिसने भारत में संगठित स्तर पर खेल-कूद प्रतियोगिताओं की प्रीफेक्ट सिस्टम और हाउस सिस्टम का आरंभ तब किया था, जब वह इंग्लैंड में अस्तित्व में आई थीं।

हमारा विद्यालय बहुत बड़ा है। मेरे विद्यालय के अध्यापक व अध्यापिकाएँ बहुत स्नेही स्वभाव के हैं और वे सभी विद्वान हैं। हमारे विद्यालय का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत आता है। आशा करता हूँ कि तुम मेरे विद्यालय से भली-भांति परिचित हो गए हो। कभी तुम्हारा शिमला आना हो तो मुझसे अवश्य मिलना। मैं तुम्हें अपना विद्यालय अवश्य दिखाऊँगा।

तुम्हारा मित्र,

संजीव

धूम्रपान के दोषों को बताते हुए, धूम्रपान छोड़ने की सलाह देते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

21, ब्लाक न-2,

नई दिल्ली-110008

दिनांक: ....

प्रिय वास्तु,

स्नेह!

बहुत दिनों से तुमसे सम्पर्क न होने के कारण तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। कुछ समय पहले मेरी मुलाकात तुम्हारे भाई से हुई। उसके द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि तुमने धूम्रपान करना आरम्भ कर दिया है। यह जानकर मुझे बहुत कष्ट हुआ। तुम एक बुद्धिमान और समझदार विद्यार्थी हो। तुम्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि धूम्रपान करने से बहुत तरह की बीमारियों का खतरा हो सकता है। धूम्रपान करने से व्यक्ति के फेफड़े कमजोर हो जाते हैं, जिससे तपेदिक (टी.बी) और दमा जैसी बीमारियाँ शरीर में घर बना लेती हैं।

आरंभ में तुम्हें इसके दुष्परिणाम नजर नहीं आएगें परन्तु धीरे-धीरे यह तुम्हारे शरीर और जीवन दोनों को खोखला बना देगा। तुम्हारे इस कार्य से तुम्हारे माता-पिता को भी बड़ा दुख होगा। अत: तुम्हें चाहिए कि तुम इस व्यसन को छोड़ दो। इस व्यसन को छोड़ने के लिए सुबह उठकर व्यायाम और योगा करो, संयम से काम लो तभी तुम स्वयं का हित कर पाओगे।

योगा तुम्हारा मनोबल बढ़ाएगा तथा व्यायाम से तुम स्वयं को तरोताज़ा महसूस करोगे। व्यायाम व योगा करने से धूम्रपान का दुष्प्रभाव भी कम हो जाता है। सही समय पर उठाया गया कदम जीवन को नई दिशा देता है। मैं आशा करता हूँ कि तुम अपने मित्र की बात मानते हुए दुबारा धूम्रमान नहीं करोगे।

तुम्हारा परम मित्र,

आकाश

मित्र को वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने पर बधाई पत्र लिखिए।

56, बलबीर नगर,

नई दिल्ली-110032

दिनांक: ....

प्रिय भावना,

सादर नमस्कार!

कल तुम्हारा पत्र मिला, यह जानकर मन को तसल्ली मिली कि तुम अपने परिवार सहित कुशलतापूर्वक हो। मुझे यह समाचार पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि तुम दिल्ली के सभी विद्यालयों के बीच हुई वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम चुनी गई। तुम्हारी यह सफलता प्रशंसा करने योग्य है। मुझे तुमसे यही आशा थी।

तुम हमेशा से ही बहुत कुशाग्रबुद्धि रही हो। हर विषय में तुम्हें गहरी जानकारी प्राप्त है। पहले भी तुम विद्यालय में हुई वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुकी हो। परंतु दिल्ली के सभी विद्यालयों में प्रथम स्थान पाना बड़े सम्मान की बात है। तुम्हारे माता-पिता तो फूले नहीं समा रहे होगें। यहाँ पर तुम्हारे सारे मित्रगण भी इस सफलता पर बहुत ख़ुश हैं।

मेरे माता-पिता ने भी तुम्हें शुभकामनाएँ व आशीर्वाद भेजा है। भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि तुम इसी तरह अपने जीवन में सफलता प्राप्त करती रहो और अपने परिवार का नाम रौशन करो। तुम्हारी तरफ़ से मिठाई उधार रही। अपने माता-पिता को मेरा नमस्कार कहना। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रहेगी। पत्र अवश्य लिखना।

तुम्हारी सखी,

खुशबू

एक गरीब बच्चे की शिक्षा-दीक्षा के लिए मित्र से सहायता माँगने हेतु पत्र लिखिए।

बी-38,

गुलाबी बाग,

नई दिल्ली-110007

दिनांक: ....

प्रिय मित्र तुषार,

नमस्कार!

आज तुम्हें पत्र लिखने का विशेष कारण है। हमारी सोसाइटी में एक काम करने वाली स्त्री है। उनके पति का स्वर्गवास हुए सात महीने से भी अधिक हो गए हैं। उनका एक बेटा है। वह हमारी ही उम्र का है। पिता की मृत्यु के कारण उनके घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई है। वह घरों में काम करके अपनी गुज़र-बसर करती हैं। उनके बेटे को पैसों की तंगी के कारण अपनी पढ़ाई छोड़ने के लिए विवश होना पड़ रहा है।

वह बहुत बुद्धिमान छात्र है। अपनी कक्षा में सदैव प्रथम आता है। उसके विद्यालय ने उसकी फीस व पुस्तकों का खर्चा उठाने का निश्चय किया है। परन्तु वर्दी, पेन, पेंसिल, कॉपियों, स्कूल के आने-जाने का किराया आदि का खर्चा उसे स्वयं ही वहन करना पड़ेगा। जिस तरह उसके हालात हैं, वह इन सबका खर्चा उठाने में असमर्थ है। मैंने उनकी बातें सुनी तो मुझे बहुत दुख हुआ। पैसों की कमी के कारण एक होनहार बच्चा अपनी पढ़ाई छोड़ दे, यह अच्छी बात नहीं है।

हमें चाहिए कुछ ऐसा करें कि वह अपनी पढ़ाई को जारी रख सके। मित्र यदि हम सब अपने जेब खर्च से उसको सौ रुपये देते रहें तो शायद उसे अपनी पढ़ाई छोड़नी न पड़े। इसके लिए मैंने नेहा, स्वाति, गगन, अमित, दीपक आदि से बात कर ली है। वे सब मेरी बात से सहमत हैं।

आशा करता हूँ कि तुम भी मेरी बात से सहमत होगें और इस नेक कार्य में हमारी सहायता अवश्य करोगे। तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारा मित्र,

संजीव